MERAJ KE JANNATI MUSHAHADAT
(HINDI BAYAAN)

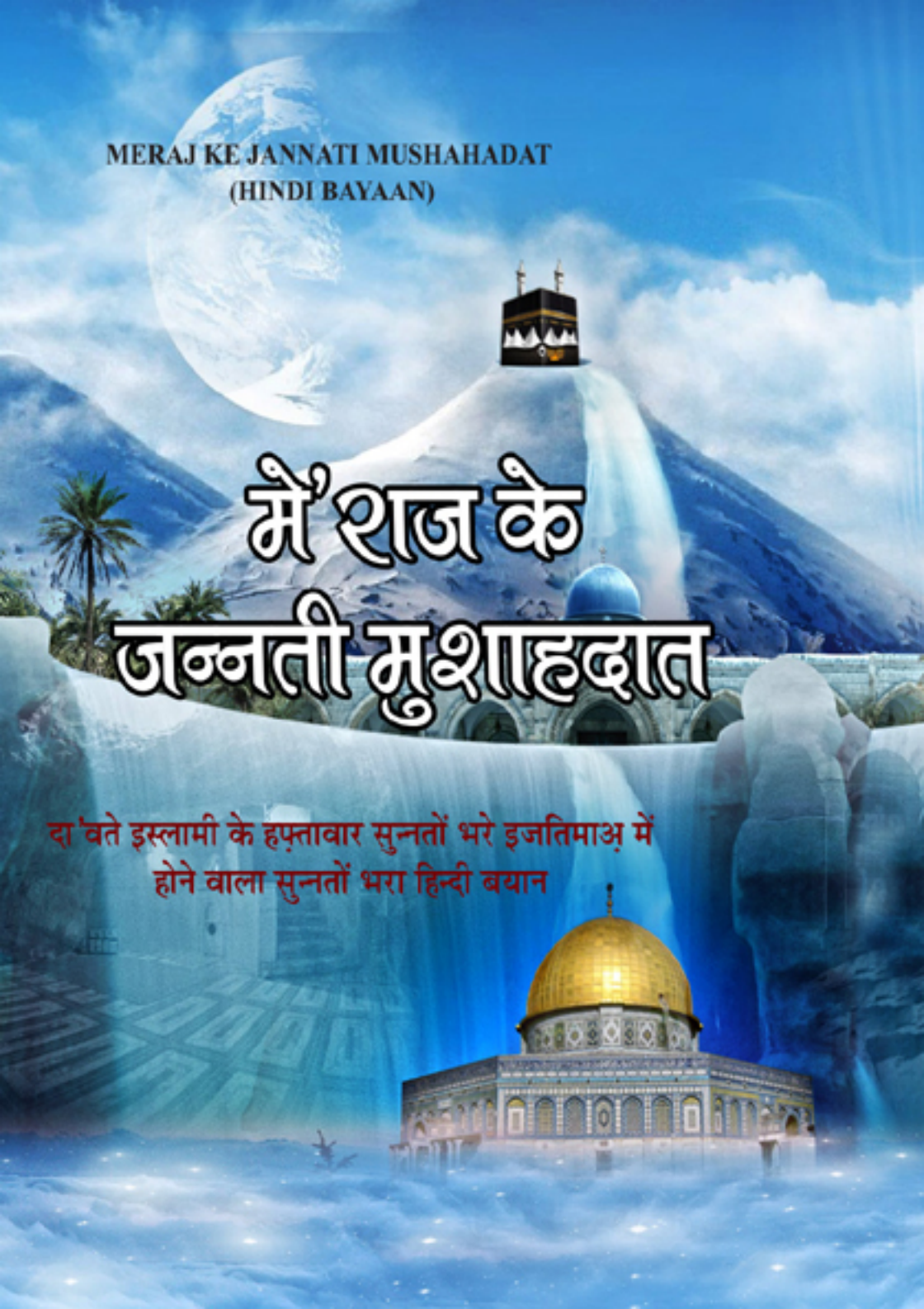

मे'राज के जन्नती मुशाहदात

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबियों के सालार, रसूलों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो मुझ पर सो (100) मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की सो (100) ह़ाजात पूरी फ़रमाएगा। इन में से तीस (30) दुन्या की हैं और सत्तर (70) आख़िरत की।"

(کنز العمال، کتاب الاذکار، باب فی الصلاۃ علیہ، جزء: ۱، ۱/ ۲۵۵، حدیث: ۲۲۲۹)

तुम्हारा नाम मुसीबत में जब लिया होगा
हमारा बिगड़ा हुवा काम बन गया होगा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1]

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

---

(1) ... معجم کبیر، سھل بن سعد الساعدی... الخ، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً[1] : ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1)...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए, इन मो'जिज़ात में से एक अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा "मे'राज" है । शबे मे'राज सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जन्नत की सैर करवाई गई जहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ढेरों इन्आ़माते इलाहिय्या का मुशाहदा फ़रमाया, आज मैं आप की ख़िदमत में वोह जन्नती मुशाहदात पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा । चुनान्चे,

जन्नत में दाख़िला

सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि (मे'राज की रात) मेरा दाख़िला जन्नत में हुवा, मैं ने देखा कि उस के संगरेज़े मोतियों के और उस की मिट्टी मुश्क की थी,[1] फिर चार नह्रें देखीं, एक पानी की जो तब्दील नहीं होता, दूसरी दूध की जिस का ज़ाइक़ा नहीं बदलता, तीसरी शराब की जिस में पीने वालों के लिये सिर्फ़ लज़्ज़त है (नशा बिल्कुल नहीं) और चौथी पाकीज़ा और साफ़ सुथरे शहद की । जन्नत के अनार जसामत में डोलों की त़रह़ और परन्दे ऊंटों की त़रह़ थे, उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने नेक बन्दों के लिये ऐसे ऐसे इन्आ़मात तय्यार कर रखे हैं, जिन्हें किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में उस का ख़याल गुज़रा ।[2]

वोह बुर्ज़ें बत़ह़ा का माह पारह बिहिश्त की सैर को सिधारा
चमक पे था ख़ुल्द का सितारा कि इस क़मर के क़दम गए थे

---

(1)...صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ذکر ادریس علیہ السلام، ص ۸۵۲، الحدیث: ۳۳۴۲

(2)...دلائل النبوۃ للبیھقی، جماع ابواب المبعث، باب الدلیل...بالافق الاعلیٰ، ۲/۳۹۴.

www.dawateislami.net

शे'र की वज़ाहत : वादिये मक्का के चांद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मे'राज की रात जन्नत में तशरीफ़ ले गए तो जन्नत के मुक़द्दर का सितारा चमक उठा, कि जन्नत में माहताबे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दम लग रहे थे।

सुरूरे मक़्दम की रोशनी थी कि ताबिशों से महे अ़रब की
जिनां के गुल्शन थे झाड़ फ़र्शी जो फूल थे सब कंवल बने थे

शे'र की वज़ाहत : जब माहे अ़रब, महबूबे रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जन्नत में आमद हुई तो रोशनी ही रोशनी फैल गई और येह सारी रोशनियां अ़रब के चांद के रूख़े रोशन से फूट रही थीं और ऐसे आ़लम में जन्नत के फूल भी ख़ूब, ख़ूब खिल रहे थे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नह्रे कौसर पर तशरीफ़ आवरी

जन्नत की सैर के दौरान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक नह्र पर तशरीफ़ लाए, जिस के कनारों पर जौफ़दार (अन्दर से ख़ाली किये हुवे) मोतियों के ख़ैमे थे और इस की मिट्टी ख़ालिस मुश्क थी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह क्या है ? अ़र्ज़ किया : येह कौसर है, जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाई है।[1]

आस्मानों पर गए और ख़ुल्द की भी सैर की
शाह का येह मर्तबा, अहलव व सहलन मरह़बा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1)...صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب فی الحوض، ص ۱۶۱۲، الحدیث: ۶۵۸۱، بتقدم وتاخر

www.dawateislami.net

तीन (3) नह्रें

मे'राज की रात ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत के दरवाज़े के पास कुरसी पर बैठे एक शख़्स को देखा, जिस के बालों में कंघी की हुई थी और उस के पास कुछ सफ़ेद चेहरों वाले और कुछ सियाह चेहरों वाले लोग थे। फिर वोह लोग जिन की रंगत में सियाही थी, एक नह्र पर आए और उस में ग़ुस्ल किया तो उन के रंग साफ़ हो गए। इस के बा'द वोह एक और नह्र पर आए और उस में ग़ुस्ल किया तो उन के रंग मज़ीद साफ़ हो गए, इस के बा'द उन्हों ने तीसरी नह्र में ग़ुस्ल किया तो उन के रंग उन के बाक़ी साथियों की त़रह़ बिल्कुल सफ़ेद हो गए, लिहाज़ा वोह अपने उन्ही साथियों के साथ बैठ गए। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा ! ऐ जिब्रील येह कौन लोग हैं ? जिन के चेहरे सफ़ेद हैं और वोह कौन हैं जिन की रंगत में कुछ ख़राबी थी, फिर वोह नह्र में ग़ुस्ल कर के निकले तो उन के रंग साफ़ हो गए ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह (जन्नत के दरवाज़े के क़रीब कुरसी पर बैठे हुवे) शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिद ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, येह ज़मीन पर पहले शख़्स हैं जिन्हों ने कंघी की। और येह सफ़ेद चेहरों वाले वोह लोग हैं जिन्हों ने अपने ईमान में किसी नाह़क़ की आमेज़िश नहीं की और वोह जिन की रंगत में कुछ ख़राबी थी येह वोह लोग हैं जिन्हों ने अच्छे अ़मल के साथ साथ कुछ बुरे अ़मल किये, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा की, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की तौबा क़बूल फ़रमा ली। और (जिन नह्रों में उन्हों ने ग़ुस्ल किया इन में से) पहली नह्र, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और दूसरी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत की नह्र है और तीसरी नह्र वोह है जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को शराबे त़हूर पिलाई है। (دلائل النبوۃ، باب الدلیل علی ان النبی عرج بہ، ۲/۴۰۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि वोह लोग जिन के चेहरों की रंगत सियाह हो चुकी थी, रह़मते इलाही की नह्र में ग़ौत़ा लगाने के सबब उन की सियाही धुल गई, फिर ने'मते इलाही की नह्र में ग़ौत़ा लगाया

www.dawateislami.net

तो रंगत मज़ीद निखर गई और जब शराबे तहूर की नहर से पिया तो उन के चेहरे बिल्कुल सफ़ेद हो गए। याद रहे कि उन्हें गुनाहों की सियाही से नजात इस वजह से मिली कि उन्हों ने (दुन्या में) रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा की थी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की तौबा को क़बूल फ़रमाया और उन के चेहरे रोशन कर दिये। वाक़ेई सच्ची तौबा न सिर्फ़ इन्सान के गुनाहों की कालक को धो देती है बल्कि बन्दे को फ़लाह व कामयाबी से हम किनार करती है।

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन कुरआने मजीद में पारह 18, सूरतुन्नूर, आयत नम्बर 31 में इरशाद फ़रमाता है :

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ (پ۱۸، النور: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की तरफ़ तौबा करो, ऐ मुसलमानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बे करीम جَلَّ جَلَالُہٗ का करम बहुत वसीअ़ है कि गुनहगार को हर वक़्त अपने करम के साए में लेने को तय्यार है, बन्दा चाहे कितना ही गुनाहगार हो उसे तौबा करने में देर नहीं करनी चाहिये और हरगिज़ हरगिज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये। ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के रह़मो करम की कोई इन्तिहा नहीं। वोह अपने बन्दों के ज़मीनो आस्मान के बराबर गुनाह भी अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमा देता है। बस तौबा सच्ची होनी चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौबा करने वालों से बहुत ख़ुश होता है। चुनान्चे,

बन्दे की तौबा पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे की तौबा से उस शख़्स से (भी) ज़ियादा ख़ुश होता है जो किसी हलाकत ख़ेज़ पथरीली ज़मीन पर पड़ाव करे, उस के साथ उस की सुवारी भी हो, जिस पर उस के खाने पीने का सामान लदा हुवा हो, फिर वोह सर रख कर सो जाए, जब बेदार हो तो उस की सुवारी जा चुकी हो, वोह उसे

www.dawateislami.net

तलाश करे यहां तक कि उसे सख़्त प्यास लग जाए तो वोह कहे कि मैं उसी जगह लौट जाता हूं जहां मैं पहले था, वहां सो जाता हूं, यहां तक कि मर जाऊं, फिर वोह अपनी कलाई पर सर रख कर मरने के लिये सो जाए, फिर जब बेदार हो तो उस के पास उस की सुवारी मौजूद हो और उस पर उस की ख़ूराक और खाने पीने की चीज़ें भी मौजूद हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स के अपनी सुवारी के लौटने पर ख़ुश होने से भी ज़ियादा ख़ुश होता है। (صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی الحض علی التوبۃ والفرح بھا، ص۱۴۶۸، حدیث: ۲۷۴۴)

मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं
हक़ीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अ़ता या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत की आवाज़

शबे मे'राज, सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र एक ऐसी वादी से हुवा, जहां ठन्डी, पाकीज़ा और ख़ुश्बूदार हवाएं चल रही थीं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक आवाज़ भी सुनी। फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह ठन्डी, पाकीज़ा और ख़ुश्बूदार हवा क्या है ? और येह आवाज़ कैसी है ? अ़र्ज़ की : येह जन्नत की आवाज़ है जो कह रही है : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मुझ में रहने वाले लोगों को मेरे पास भेज दे और उन को जिन का तू ने मुझ से वा'दा किया है, बेशक मेरे अन्दर ख़ुश गवार ख़ुश्बूएं, रेशम, करेब (کَرِے۔بْ) और कम ख़्वाब के उ़म्दा कपड़े और बे मिसाल चीज़ें, मोती, मूंगे, सोना, चांदी और आफ़्ताबे (ढ़कने दार और दस्ते लगे हुवे लोटे) नीज़ फल, शहद, (पाकीज़ा) शराब और दूध बहुत ज़ियादा है। लिहाज़ा उन को मेरे अन्दर भेज जिन का तू ने मुझ से वा'दा किया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया : हर मुसलमान मोमिन मर्द व औ़रत और जो मुझ पर और मेरे रसूलों पर ईमान लाए, नेक अ़मल करे नीज़ किसी को मेरा शरीक और बराबर न ठहराए वोह तेरे लिये है, और जो मुझ से

www.dawateislami.net

डरे मैं उसे अम्न दूंगा, जो मुझ से सुवाल करे मैं उसे अ़त़ा करूंगा, जो मुझे क़र्ज़ दे (सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला अदा करे) मैं उसे जज़ा दूंगा, जो मुझ पर तवक्कुल करे, मैं उसे किफ़ायत करूंगा और मैं **अल्लाह** हूं, मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता, बेशक ईमान लाने वाले कामयाब हुवे । (इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने पाक कलाम में से सूरए मुअमिनून में मज़्कूर कामयाब मोअमिनीन की सिफ़ात बयान फ़रमाईं) तो जन्नत बोली : "मैं राज़ी हूं ।" (دلائل النبوۃ، باب الدلیل علی ان النبی عرج بہ، ۳۹۹/۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि जन्नत ने अपने अन्दर पाए जाने वाली कितनी दिलकश और उ़म्दा ने'मतें ज़िक्र कीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह भी अ़र्ज़ की, कि इन ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाले ख़ुश नसीबों को मेरे अन्दर भेज दे । इस पर ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत को इस के मकीनों या'नी अहले ईमान मर्दों और औ़रतों के बारे में बताने के बा'द कामयाब मोअमिनीन की सिफ़ात भी बयान फ़रमाईं । आइये वोह सिफ़ात सुनते हैं । चुनान्चे,

फ़िरदौस की मीरास पाने वाले लोग

पारह 18 सूरए मुअमिनून आयत नम्बर 1 ता 11 में जन्नत की मीरास पाने वाले ख़ुश नसीबों के बारे में इरशादे बारी तआ़ला है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ
صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ﴿۲﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ
مُعْرِضُوْنَ ﴿۳﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ﴿۴﴾
وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰۤى
اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ
مَلُوْمِیْنَ ﴿۶﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं, और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं

www.dawateislami.net

هُمُ الْعٰدُوْنَ ۙ﴿۷﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ﴿۸﴾ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ۘ﴿۹﴾ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾

(پ۱۸، المؤمنون: ۱-۱۱)

कि उन पर कोई मलामत नहीं, तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की रिआ़यत करते हैं, और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं, येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे और वोह इस में हमेशा रहेंगे।

फ़रमा के शफ़ाअ़त मेरी ऐ शाफ़ेए़ मेह़शर !
दोज़ख़ से बचा कर मुझे जन्नत में बसाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत के दरवाज़े पर लिखी तह़रीर

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस रात मुझे मे'राज हुई, मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर येह लिखा हुवा देखा कि **सदक़े का सवाब दस** (10) **गुना** और **क़र्ज़ का अट्ठारह** (18) **गुना है**। मैं ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त किया : क्या सबब है कि क़र्ज़ का दरजा सदक़े से बढ़ गया है ? उन्हों ने कहा कि साइल के पास माल होता है और फिर भी सुवाल करता है जब कि क़र्ज़ लेने वाला ह़ाजत की बिना पर ही क़र्ज़ लेता है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से हमें भी येह दर्स मिलता है कि अगर किसी मुसलमान को क़र्ज़ की ज़रूरत हो तो **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों से ह़स्बे इस्तिता़अ़त क़र्ज़ दे कर उस की मदद करें और ढेरों अज्रो सवाब ह़ासिल करें, याद रहे कि क़र्ज़ देने और क़र्ज़दारों पर नर्मी करने वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपना ख़ास फ़ज़्लो करम फ़रमाता है। चुनान्चे,

---

(1)...سنن ابن ماجة، كتاب الصدقات، باب القرض، ص۳۸۹، الحديث: ۲۴۳۱.

www.dawateislami.net

मक़रूज़ पर नर्मी से बख़्शिश हो गई

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स ने कभी कोई नेक काम न किया था, हां अलबत्ता ! वोह लोगों को क़र्ज़ दिया करता और अपने नोकरों से कहा करता कि मक़रूज़ ख़ुश हाल हो तो उस से क़र्ज़ ले लेना और अगर तंग दस्त हो तो मत लेना (बल्कि दर गुज़र करना और मज़ीद मोहलत दे देना) । ऐ काश ! हमारा रब عَزَّوَجَلَّ भी हम से दर गुज़र फ़रमाए ।" चुनान्चे, जब उस ने जहाने फ़ानी से कूच किया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तू ने कभी कोई नेकी भी की ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं, हां अलबत्ता ! मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और जब अपने ख़ादिम को क़र्ज़ की वुसूली के लिये भेजता तो उसे कहा करता था कि ख़ुश हाल से तू ले लेना मगर तंग दस्त से मत लेना बल्कि दर गुज़र करना, हो सकता है कि (इसी के सबब) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से भी दर गुज़र फ़रमाए ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "(जाओ !) मैं ने तुम्हें बख़्श दिया ।" (مسند امام احمد، مسند ابی ھریرہ، ۳/۲۸۵، حدیث:۸۷۳۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुलन्दो बाला महल्लात

मरवी है कि मे'राज की रात जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द बुलन्दो बाला महल्लात मुलाहज़ा फ़रमाए, जिन के बारे में पूछने पर हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि येह ग़ुस्सा पीने वालों और लोगों से अ़फ़्वो दर गुज़र करने वालों के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एहसान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है ।"[1]

---

(1)...مسند الفردوس، باب الراء، ۲/۲۵۵، الحدیث:۳۱۸۸.

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुस्सा ग़ैर इख़्तियारी शै है, येह नफ़्स के उस जोश को कहते हैं जो बदला लेने पर उभारता है और इस से सीने में इन्तिक़ाम की आग़ भड़क उठती है। ऐसे में जो शख़्स अपने आप को क़ाबू में रखे और अ़फ़्वो दर गुज़र से काम ले, अह़ादीस में उस के लिये बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हैं, जिन में से एक फ़ज़ीलत तो अभी बयान हुई, आइये ! मज़ीद दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा समाअ़त फ़रमाइये।

1. जिस ने गुस्से को ज़ब्त़ कर लिया ह़ालांकि वोह उसे नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस को तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा और इख़्तियार देगा कि जिस ह़ूर को चाहे ले ले।[1]

2. मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वोह हैं कि जब उन्हें गुस्सा आ जाए तो फ़ौरन रुजूअ़ कर लेते हैं।[2]

हुस्ने अख़्लाक़ और नर्मी दो दूर हो ख़ूए इश्तिआ़ल आक़ा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा ख़ैमे

जन्नत में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा ख़ैमे मुलाह़ज़ा फ़रमाए जिन की मिट्टी मुश्क थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : "لِمَنْ هٰذَا يَا جِبْرِيْل या'नी ऐ जिब्रील ! येह किस के लिये हैं ?" अ़र्ज़ किया : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के अइम्मा और मुअज़्ज़िनीन के लिये हैं।[3]

---

(1)...سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، ص ۷۵۲، الحدیث: ۴۷۷۷.

(2)...المعجم الاوسط للطبرانی، باب المیم، من اسمہ محمد، ۴/ ۲۲۴، الحدیث: ۵۷۹۳.

(3)...المسند للشاشی، مسند عبادۃ بن الصامت، ۳/ ۳۲۱، الحدیث: ۱۴۲۸.

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ रिज़ाए इलाही के लिये अज़ान देने और इमामत करने की क्या ख़ूब फ़ज़ीलत है कि रब तआ़ला ने उन के लिये जन्नत में मोतियों से बने हुवे ख़ैमे तय्यार कर रखे हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आइये ! इस के बारे में मज़ीद दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा सुनते हैं।

1. सवाब की ख़ात़िर अज़ान देने वाला उस शहीद की मानिन्द है जो ख़ून में लिथड़ा हुवा है और जब मरेगा, क़ब्र में उस के जिस्म में कीडे नहीं पड़ेंगे।(1)

2. जिस ने पांचों[5] नमाज़ों की अज़ान, ईमान की बिना पर ब निय्यते सवाब कही, उस के जो गुनाह पहले हुवे हैं मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो ईमान की बिना पर सवाब के लिये अपने साथियों की पांच[5] नमाज़ों में इमामत करे, उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नूर में छुपा हुवा आदमी

सफ़रे मे'राज की सुहानी रात प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो अ़र्श के नूर में छुपा हुवा था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह कौन है, क्या कोई फ़िरिश्ता है ? कहा गया : नहीं। फ़रमाया : कोई नबी हैं ? कहा गया : नहीं। पूछा : फिर येह कौन है ? बताया गया : येह वोह शख़्स है कि दुन्या में इस की ज़बान ज़िक्रे इलाही से तर रहती थी, इस का दिल मस्जिदों में लगा रहता था और येह कभी अपने वालिदैन को बुरा कहे जाने या उन की बे इ़ज़्ज़ती किये जाने का सबब नहीं बना।(3)

---

(1)... الترغیب والترھیب، کتاب الصلاۃ، الترغیب فی الاذان... الخ، ص ۹۵، الحدیث: ۲٤.

(2)... کنز العمال، کتاب الصلاۃ، قسم الاقوال، الفصل الرابع... الخ، ۲۸۹/۷، الحدیث: ۲۰۹۰۲

(3)... موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الاولیا، ٤۱٥/۲، الحدیث: ۹٥.

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस रिवायत से पता चलता है कि ज़िक्रे इलाही की कसरत, मसाजिद से महब्बत और वालिदैन के लिये बुराई का सबब बनने से बचना, येह तीनों आ'माल **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ही महबूब हैं। इस रिवायत में इस बात की तरग़ीब मौजूद है कि इन्सान गाली गलोच, लड़ाई झगड़ा, नशा बाज़ी, जूआ वग़ैरा किसी भी ऐसे फ़े'ल का हरगिज़ मुर्तकिब न हो जो उस के वालिदैन के लिये त़ा'न व तश्नीअ़ और बे इज़्ज़ती का बाइस बने और ह़श्र के रोज़ ख़ुद उसे भी शर्मिन्दगी का सामना करना पड़े।

वालिदैन को भी चाहिये कि इब्तिदा ही से अपनी अवलाद की अच्छी तर्बिय्यत करें, अच्छे कामों की तरग़ीब दिलाएं, बुरे कामों पर रोक टोक करें, अगर उन्हें यूंही अपने ह़ाल पर छोड़ दिया और वोह ग़लत़ रास्ते पर चल पड़े तो फिर सिवाए पछतावे के कुछ हाथ न आएगा, दर ह़क़ीक़त अवलाद को नेक या बद बनाने में वालिदैन की तर्बिय्यत का बड़ा दख़्ल होता है। मगर अफ़्सोस वालिदैन ही अपनी अवलाद की सह़ीह़ तर्बिय्यत करने से ग़ाफ़िल हैं और ख़ुद ही गुनाहों भरी ज़िन्दगी में बद मस्त हैं, जब वालिदैन का मक़्सदे ह़यात ह़ुसूले दौलत, आराम त़लबी, वक़्त गुज़ारी और ऐ़शकोशी बन जाए तो वोह अपनी अवलाद की क्या तर्बिय्यत करेंगे और जब तर्बिय्यते अवलाद से ला परवाही के असरात सामने आते हैं तो येही वालिदैन हर एक के सामने अपनी अवलाद के बिगड़ने का रोना रोते दिखाई देते हैं।

ऐसे वालिदैन को ग़ौर करना चाहिये कि अवलाद को इस ह़ाल तक पहुंचाने में इन का कितना हाथ है, क्यूंकि इन्हों ने अपने बच्चे को ABC बोलना तो सिखाया मगर क़ुरआन पढ़ना न सिखाया, मग़रिबी तहज़ीब के त़ौर त़रीक़े तो समझाए, मगर रसूले अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें न सिखाईं, मा'लूमाते आ़म्मा (जनरल नॉलेज) की अहम्मिय्यत पर इस के सामने घन्टों कलाम किया, मगर फ़र्ज़ दीनी उ़लूम के ह़ुसूल की रग़बत न दिलाई, इस के दिल में माल की महब्बत तो डाली, मगर इ़श्के़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

शम्अ़ फ़रोज़ां न की, इसे दुन्यवी नाकामियों का ख़ौफ़ तो दिलाया मगर इमतिहाने क़ब्रो ह़श्र में नाकामी से वहूशत न दिलाई, इसे हाए हेलो कहना तो सिखाया मगर सलाम करने का त़रीक़ा न बताया । गुनाहों के इर्तिकाब की आज़ादी और लह्वो लइब के त़रह़ त़रह़ के आलात का बिला रोक टोक इस्ति'माल, केबल, इन्टरनेट की कारस्तानियां, सोश्यल मीडिया के ग़लत़ इस्ति'माल, रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों में इन्हिमाक और बिगड़ा हुवा घरेलू माह़ोल, येह सब कुछ बच्चे की त़बीअ़त में शैत़ानिय्यत व नफ़्सानिय्यत को इतना क़द आवर कर देता है कि इस से पाकीज़ा किरदार की तवक़्क़ोअ़ बहुत मुश्किल हो जाती है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी और अपनी अवलाद की सह़ीह़ तर्बिय्यत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । अवलाद की बेहतरीन तर्बिय्यत कैसे करें ? येह जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की शाएअ़ कर्दा किताब **'तर्बिय्यते अवलाद'** का मुत़ालआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अवलाद की तर्बिय्यत के ढेरों मदनी फूल ह़ासिल होंगे ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

मे'राज की बा बरकत रात जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नत में तशरीफ़ लाए तो रेशम के पर्दों से आरास्ता एक मह़ल मुलाह़ज़ा फ़रमाया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह किस के लिये है ? अ़र्ज़ किया : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ।[1]

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क्या ख़ूब शान है ! याद रहे कि नबियों और रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द इन्सानों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से अफ़्ज़ल हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल

---

(1)... الریاض النضرۃ، الباب الاول فی مناقب ابی بکر، الفصل الحادی عشر، ۲/۱۱۰.

www.dawateislami.net

बे शुमार हैं, रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मर्दों में सब से पहले आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ही ईमान लाए, सफ़र व ह़ज़र में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ रहे, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हमराही में ही हिजरत की सआ़दत ह़ासिल की और फ़नाफ़िर्रसूल के उस मक़ाम पर फ़ाइज़ हुवे कि अपना माल, जान, अवलाद, वत़न अल ग़रज़ हर शै रसूले नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान कर दी । येही वजह है कि बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने बहुत बुलन्द मरातिब पाए और ढेरों ढेर इन्आ़माते इलाहिय्या के ह़क़दार भी हुवे ।

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का !
है यारे ग़ार, महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का !
रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आ़लम से
येह आ़लम में है किस का मर्तबा, सिद्दीक़े अक्बर का !

(ज़ोक़े ना'त स. 57)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के क़दमों की आहट

जन्नत की सैर के दौरान सरदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी के क़दमों की आहट समाअ़त फ़रमाई, जिस के बारे में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बताया गया कि येह ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हैं ।[1]

क़ुरबान जाइये ! क्या शान है मुअज़्ज़िने रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की, कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के क़दमों की आहट जन्नत में समाअ़त फ़रमा रहे हैं । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को येह मक़ाम किस अ़मल के सबब ह़ासिल हुवा, आइये सुनते हैं ! चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि (एक दफ़्आ़)

---

(1)...مشکاۃ المصابیح کتاب المناقب، باب مناقب عمر، ۲/۴۱۸، الحدیث: ۶۰۳۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ज्र के वक़्त ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : ऐ बिलाल ! मुझे बताओ तुम ने इस्लाम में कौन सा ऐसा अ़मल किया है जिस पर सवाब की उम्मीद सब से ज़ियादा है, क्यूंकि मैं ने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे क़दमों की आहट सुनी है । अ़र्ज़ किया : मैं ने अपने नज़दीक कोई उम्मीद अफ़्ज़ा काम नहीं किया । हां ! मैं ने दिन रात की जिस घड़ी भी वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो इस क़दर नमाज़ पढ़ ली, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे मुक़द्दर में की थी ।[1]

शर्हे ह़दीस

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुवे ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) का हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे जन्नत में जाना ऐसा है जैसे नोकर चाकर बादशाहों के आगे **'हटो बचो'** करते हुवे चलते हैं । मत़लब येह है कि ऐ बिलाल ! तुम ने ऐसा कौन सा काम किया जिस से तुम को मेरी येह ख़िदमत मुयस्सर हुई ? ख़याल रहे कि मे'राज की रात न तो ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه), हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नत में गए न आप को मे'राज हुई बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस रात वोह वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाया जो क़ियामत के बा'द होगा कि तमाम ख़ल्क़ से पहले हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में दाख़िल होंगे, इस त़रह़ कि ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ख़ादिमाना हैसिय्यत से आगे आगे होंगे । इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुवे, एक येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लोगों के अन्जाम पर ख़बरदार किया कि कौन जन्नती है और कौन दोज़ख़ी और कौन किस दरजे का जन्नती, दोज़ख़ी है, येह उ़लूमे ख़म्सा में से हैं और दूसरे येह कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कान व आंख लाखों बरस बा'द होने वाले वाक़िआ़त को सुन लेते हैं, देख लेते हैं येह वाक़िआ़ उस तारीख़ से कई

---

(1)...صحیح المسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل بلال، ص۹۵۷، الحدیث: ۲۴۵۸.

www.dawateislami.net

लाख साल बा'द होगा, मगर क़ुरबान उन कानों के आज ही सुन रहे हैं। तीसरे येह कि इन्सान जिस ह़ाल में ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसी ह़ाल में वहां होगा, ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपनी ज़िन्दगी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारी वहां भी ख़ादिम हो कर ही उठे।

और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रमान कि "मैं ने दिन रात की जिस घड़ी भी वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो इस क़दर नमाज़ पढ़ ली जो मेरे मुक़द्दर में थी" की वज़ाह़त करते हुवे मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी दिन रात में जब भी मैं ने वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो दो नफ़्ल **'तह़िय्यतुल वुज़ू'** पढ़ लिये। मगर यहां अवक़ाते ग़ैर मकरूह में पढ़ना मुराद है ताकि येह ह़दीस मुमानअ़त की अह़ादीस के ख़िलाफ़ न हो। ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से येह पूछना इस लिये था ताकि आप येह जवाब दें और उम्मत इस पर अ़मल करे, वरना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो हर शख़्स के हर छुपे खुले अ़मल से वाक़िफ़ हैं नीज़ येह दरजा सिर्फ़ ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन नवाफ़िल का है हज़ारहा आदमी येह नवाफ़िल पढ़ेंगे या पाबन्दी करेंगे मगर उन्हें येह ख़िदमत नसीब नहीं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से हमें ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक़ाम व मर्तबे के साथ साथ तह़िय्यतुल वुज़ू की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत भी मा'लूम हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमारी इस्लाह़ के लिये 72 मदनी इन्आ़मात का जो मदनी गुलदस्ता अ़त़ा फ़रमाया है, उस में एक मदनी इन्आ़म **'तह़िय्यतुल वुज़ू'** अदा करने से मुतअ़ल्लिक़ भी है। चुनान्चे, मदनी इन्आ़म नम्बर 20 में है : "क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद अदा फ़रमाई ?"

---

(1)....मिरआतुल मनाजीह़, नवाफ़िल का बाब, पहली फ़स्ल, 2/300

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ख़ुलूसे निय्यत के साथ मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़बरजद और याक़ूत के ख़ैमे

जन्नत की ह़सीनो जमील और प्यारी वादियों की सैर फ़रमाते हुवे प्यारे आक़ा, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक नह्र पर तशरीफ़ लाए जिसे बैज़ख़ कहा जाता है । उस पर मोतियों, सब्ज़ ज़बरजद और सुर्ख़ याक़ूत के ख़ैमे थे । इतने में एक आवाज़ आई : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्रील ! येह कैसी आवाज़ है ? अ़र्ज़ किया : येह ख़ैमों में पर्दा नशीन ह़ूरें हैं, इन्हों ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम कहने की इजाज़त त़लब की थी और रब तआ़ला ने इन्हें इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी । फिर वोह (ह़ूरें) कहने लगीं : हम ख़ुश रहने वालियां हैं कभी ना गवारी व नफ़रत का बाइ़स न होंगी और हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी फ़ना न होंगी ।[1]

मुद्दत से जो अरमान था वोह आज निकाला
हूरों ने किया ख़ूब नज़्ज़ारा शबे मे'राज

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत को अपने बन्दों के लिये कितना आरास्ता कर रखा है और इस में कैसी कैसी उ़म्दा ने'मतें तय्यार कर रखी हैं । आइये ! मुख़्तसरन जन्नत के कुछ मज़ीद अवसाफ़ सुनते हैं ताकि हमारे दिलों में इसे ह़ासिल करने की रग़बत पैदा हो और नेक आ'माल का जज़्बा नसीब हो । चुनान्चे,

---

(1)... الدر المنثور، سورۃ الرحمن، تحت الآیۃ: ۷۲، ۱۴/ ۱۶۱.

www.dawateislami.net

जन्नत का बयान

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल में जन्नत के बारे में बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

जन्नत एक मकान है कि अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों के लिये बनाया है, इस में वोह ने'मतें मुहय्या की हैं जिन को न आंखों ने देखा, न कानों ने सुना, न किसी आदमी के दिल पर इन का ख़त़रा (या'नी गुमान) गुज़रा । जो कोई मिसाल इस की ता'रीफ़ में दी जाए समझाने के लिये है, वरना दुन्या की आ'ला से आ'ला शै को जन्नत की किसी चीज़ के साथ कुछ मुनासबत नहीं । जन्नत कितनी वसीअ़ है, इस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही जानें, इजमाली बयान येह है कि इस में सो (100) दरजे हैं । हर दो दरजों में वोह मसाफ़त है जो आस्मानो ज़मीन के दरमियान है । जन्नत में एक दरख़्त है जिस के साए में सो (100) बरस तक तेज़ घोड़े पर सुवार चलता रहे और ख़त्म न हो । जन्नत के दरवाज़े इतने वसीअ़ होंगे कि एक बाज़ू से दूसरे तक तेज़ घोड़े की सत्तर (70) बरस की राह होगी । जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं, एक ईंट सोने की, एक चांदी की, ज़मीन ज़ा'फ़रान की, कंकरियों की जगह मोती और याक़ूत । और एक रिवायत में है कि जन्नते अ़द्न की एक ईंट सफ़ेद मोती की है, एक याक़ूते सुर्ख़ की, एक ज़बरजद सब्ज़ की और मुश्क का गारा है और घास की जगह ज़ा'फ़रान है, मोती की कंकरियां, अ़म्बर की मिट्टी, जन्नत में एक एक मोती का ख़ैमा होगा जिस की बुलन्दी साठ (60) मील । जन्नत में चार (4) दरया हैं, एक पानी का, दूसरा दूध का, तीसरा शहद का, चौथा शराब का, फिर इन से नहरें निकल कर हर एक के मकान में जारी हैं । वहां की नहरें ज़मीन खोद कर नहीं बहतीं, बल्कि ज़मीन के ऊपर ऊपर रवां हैं, नहरों का एक कनारा मोती का, दूसरा याक़ूत का और नहरों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क

www.dawateislami.net

की । जन्नतियों को जन्नत में हर क़िस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा, अगर किसी परन्द को देख कर उस के गोश्त खाने को जी हो तो उसी वक़्त भुना हुवा उन के पास आ जाएगा, अगर पानी वग़ैरा की ख़्वाहिश हो तो कूज़े ख़ुद हाथ में आ जाएंगे, इन में ठीक अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ पानी, दूध, शराब, शहद होगा कि उन की ख़्वाहिश से एक क़तरा कम न ज़ियादा, बा'द पीने के ख़ुद ब ख़ुद जहां से आए थे चले जाएंगे । सर के बाल और पलकों और भंवों के सिवा जन्नती के बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मगीं आंखें, तीस बरस की उ़म्र के मा'लूम होंगे कभी इस से ज़ियादा मा'लूम न होंगे । अदना जन्नती के लिये अस्सी हज़ार (80,000) ख़ादिम और बहत्तर (72) बीबियां होंगी और उन को ऐसे ताज मिलेंगे कि इस में का अदना मोती मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान रोशन कर दे । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, 1/152-162 मुल्तक़त़न)

बिला हिसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब
पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मे'राज की रात प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहां मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन्दों पर होने वाले इन्आ़माते इलाहिय्या का मुशाहदा फ़रमाया तो वहीं नाफ़रमानों को कह्रे इलाही में गिरिफ़्तार भी देखा, जो अपने गुनाहों की पादाश (सज़ा) में इन्तिहाई दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला थे । चुनान्चे,

अ़ज़ाबात में मुब्तला लोग

मरवी है कि मे'राज की रात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा जिन पर कुछ अफ़राद मुक़र्रर थे, इन में से बा'ज़ अफ़राद ने उन लोगों के जबड़े खोल रखे थे और बा'ज़ दूसरे अफ़राद उन का गोश्त काटते और ख़ून के साथ ही उन के मुंह

www.dawateislami.net

में धकेल देते । प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह लोगों की ग़ीबतें और उन की ऐ़बजूई करने वाले हैं ।(1)

मे'राज की शब नबियों के सरदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोज़ख़ में कुछ ऐसे लोग भी देखे जो आग की शाख़ों से लटके हुवे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने वालिदैन को गालियां देते थे ।(2)

उस रात सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास भी तशरीफ़ लाए जिन के आगे और पीछे चीथड़े लटक रहे थे और वोह चोपायों की त़रह़ चरते हुवे ख़ारदार घास, थोहर और जहन्नम के तपे हुवे (गर्म) पथ्थर निगल रहे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ किया : येह वोह लोग हैं जो अपने मालों की ज़कात नहीं देते थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों पर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता ।(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जन्नत की आसाइशों और ने'मतों पर नज़र रखने के साथ साथ ज़रा इन अ़ज़ाबात पर भी ग़ौर कीजिये ! कौन है जो इन हौलनाक अ़ज़ाबात को सह सके, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! किसी में भी जहन्नम का अ़ज़ाब बरदाश्त करने की त़ाक़त नहीं और फिर अपनी ना तुवानी व कमज़ोरी को देखिये, आह ! हमारी कमज़ोरी का ह़ाल तो येह है कि हल्का सा सर दर्द या बुख़ार तड़पा कर रख देता है तो फिर आख़िरत के येह दर्दनाक अ़ज़ाब क्यूंकर बरदाश्त किये जा सकते हैं ? इस लिये अभी वक़्त है डर जाएं और फ़ौरन से पेशतर गुनाहों से तौबा करें वरना अगर येह मौक़अ़ हाथ से निकल गया और तौबा से पहले ही मौत ने आ लिया तो फिर हलाकत ही

---

(1)...مسند الحارث، کتاب الایمان، باب ما جاء فی الاسراء، ۱/۱۷۲، الحدیث: ۲۷.

(2)...الزواجر، کتاب النفقات علی الزوجات...الخ، الکبیرۃ الثانیۃ بعد الثلاثمائۃ، ۲/۱۲۵.

(3)...الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، الترھیب من منع الزکاۃ...الخ، ص۲۶۳، الحدیث: ۱۵

www.dawateislami.net

हलाकत है। याद रहे कि दुन्या की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है जब कि आख़िरत की ज़िन्दगी दाइमी (या'नी हमेशा रहने वाली) है यक़ीनन कामयाब वोही है जो इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में अपनी आख़िरत संवारने में लगा रहे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के काम कर के जन्नत में दाख़िल हो जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में पारह 4 सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 185 में इरशाद फ़रमाता है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾

(پ۴،آل عمران:۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

आइये इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी को संवारने के बजाए अपनी आख़िरत को संवारें और नेक आ'माल के ज़रीए उस जन्नत को ह़ासिल करने की कोशिश करें, जहां कोई ग़म नहीं और वहां हमेशा रहना है। नेकियों पर कारबन्द रहने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से वाबस्तगी भी है, इस मदनी माह़ोल की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकियां करने, गुनाहों से बचने और आख़िरत की तय्यारी का जज़्बा नसीब होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी हर दम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

क़िताब 'फ़ैज़ाने मे'राज' का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे मे'राज सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और भी कई मुशाहदात फ़रमाए, जिन का तफ़्सीली बयान पढ़ने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **'फ़ैज़ाने मे'राज'** का मुत़ालआ़ कीजिये। इस किताब में सफ़रे बैतुल मुक़द्दस के मुशाहदात, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़ुत़बे, सातों आस्मानों की

www.dawateislami.net

सैर, **अल्लाह** तआ़ला से हम कलाम होने और वाक़िअ़ए मे'राज के बारे में दीगर बहुत सी बातें इन्तिहाई ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान की गई हैं, आप भी इस किताब को हदिय्यतन ह़ासिल कर के ख़ुद भी पढ़ें और लंगरे रसाइल भी करें या'नी दूसरों को तोह़्फ़तन पेश करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मे'राज की रात नबिय्ये मोह़तरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो जन्नती मुशाहदात किये वोह आप ने सुने, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब जन्नती दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए तो रिज़वाने जन्नत ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिक़बाल किया, वहां आप ने जन्नती नह्रों और इस के बाग़ात और ख़ुशनुमा परन्दों को मुलाह़ज़ा फ़रमाया, नह्रे कौसर को देखा जिस पर मोतियों के ख़ैमे थे और इस की मिट्टी मुश्क की थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत में ऐसे बुलन्दो बाला मह़ल्लात भी मुलाह़ज़ा फ़रमाए जिन के बारे में जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की, कि येह ग़ुस्सा पीने वालों और लोगों से अ़फ़्वो दर गुज़र करने वालों के लिये हैं नीज़ मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा ख़ैमे भी देखे जिन के बारे में बताया गया कि येह आप की उम्मत के अइम्मा और मुअज़्ज़िनीन के लिये हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के लिये रेशम के पर्दों से आरास्ता किया हुवा मह़ल भी देखा और जन्नत की सैर करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़दमों की आवाज़ भी सुनी। जन्नत एक ऐसा मकान है जहां अहले ईमान हमेशा रहेंगे, इस में ऐसी ने'मतें हैं जिन को न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी आदमी के दिल में इस का ख़याल आया। जन्नतुल फ़िरदौस की मीरास उन ख़ुश नसीब अहले ईमान को मिलेगी जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं और किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) नहीं करते, ज़कात देते हैं, अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं, अपनी अमानतों और अपने अ़हद की रिआ़यत करते हैं, अपनी

www.dawateislami.net

नमाज़ों की निगहबानी करते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी इन पाकीज़ा सिफ़ात का पैकर बनाए और दुन्या व आख़िरत की कामयाबियों से हम कनार फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी चैनल का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दौरे ह़ाज़िर में मीडिया ज़ेह्न साज़ी व किरदार साज़ी में एक कारगर हथयार का काम कर रहा है, बहुत से लोग अपने मख़्सूस गुमराह कुन, बात़िल नज़रिय्यात और उ़रयानी व फ़ह़्ह़ाशी फैलाने के लिये शबो रोज़ इस का ग़लत़ इस्ति'माल करने लगे, जिस के बाइ़स नौजवान नस्ल इन बुरे असरात व अफ़्कार की लपेट में आ गई । ऐसे में हर दर्दमन्द दिल की बस एक ही सदा थी कि काश ! कोई मीडिया की इस जंग में अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की पासबानी का अ़लम (या'नी झन्डा) उठा ले और पाकीज़गी व त़हारते फ़िक्र और इस्लाह़े अ़क़ाइदो आ'माल का अ़लम बरदार एक ख़ालिस इस्लामी चैनल शुरूअ़ करे । तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा ने बड़ी शिद्दत से मह़सूस किया कि मुसलमानों के घरों से T.V. निकलवाना क़रीब ब ना मुमकिन है, बस एक ही सूरत नज़र आई और वोह येह कि जिस त़रह़ दरया में तुग़यानी आती है तो उस का रुख़ खेतों वग़ैरा की त़रफ़ मोड़ दिया जाता है ताकि खेत भी सैराब हों और आबादियों को भी हलाकत से बचाया जा सके, ऐन इसी त़रह़ T.V. ही के ज़रीए़ मुसलमानों के घरों में दाख़िल हो कर उन को ग़फ़्लत की नींद से बेदार किया जाए । जब इस शो'बे के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल की गईं तो मा'लूम हुवा कि अपना T.V. चैनल खोल कर फ़िल्मों डिरामों, गानों, बाजों, मूसीक़ी की धूनों और औ़रतों की नुमाइशों से बचते हुवे 100 फ़ीसदी इस्लामी मवाद फ़राहम करना मुमकिन है, तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा ने ख़ूब जिद्दो जहद कर के रमज़ानुल मुबारक सिने 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ सितम्बर सिने

www.dawateislami.net

2008 ईसवी से मदनी चैनल के ज़रीए घर घर सुन्नतों का पैग़ाम आ़म करना शुरूअ़ कर दिया और देखते ही देखते इस के हैरत अंगेज़ मदनी नताइज आने लगे।

मदनी चैनल की मुहिम है नफ़्सो शैत़ां के ख़िलाफ़
जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ *ए'तिराफ़*
नफ़्से अम्मारा पर ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोर दार
कि नदामत के सबब होगा गुनहगार अश्कबार

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बारह मदनी कामों में हिस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियां करने, गुनाहों से बचने, फ़िक्रे आख़िरत के लिये कुढ़ने और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर नेकी के कामों में तरक़्क़ी के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम 'अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत' भी है। नेकी की दा'वत देना तो ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ख़ुद सय्यिदुल अम्बिया महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी इसी मक़्सद के लिये दुन्या में भेजा गया, इन्हों ने मुख़्तलिफ़ मुश्किलात व तकालीफ़ बरदाश्त करने के बा'द भी اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر के इस अ़ज़ीम फ़रीज़े को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल हमें भी इसी अ़ज़ीम मक़्सद को पूरा करने के लिये हर हफ़्ते 'अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत' में शिर्कत करने की तरग़ीब दिलाता है, हमें भी वक़्त निकाल कर इस अ़ज़ीम मदनी काम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ढेरों बरकतें नसीब होंगी। आइये इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनतें हैं।

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत के बादल कैसे छटे ?

यू.के (इंग्लेन्ड) के मुक़ीम इस्लामी भाई अपनी दास्ताने इ़श्रत के ख़ातिमे के अह़वाल कुछ इस त़रह़ बयान करते हैं कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में आने से पहले मैं ग़फ़्लत भरी ज़िन्दगी बसर कर रहा था। दुन्या की रंगीनियों में इस क़दर खोया हुवा था कि नमाज़ों की अदाएगी का होश था न ही दीगर फ़राइज़ व वाजिबात की कोई पाबन्दी का ज़ेह्न था। सुन्नतों की अ़ज़मत व शान से भी ना बलद था, फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल दुन्या की रंगीनियों में शाग़िल अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद कर रहा था। मेरी इ़स्यां शिआ़र ज़िन्दगी में कुछ इस त़रह़ सुन्नतों की बहार आई कि एक मरतबा मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। इजतिमाअ़ में होने वाले सुन्नतों भरे बयान, ज़िक्रो दुरूद और बिल ख़ुसूस आख़िर में मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मेरे दिलो दिमाग़ पर छाई गुनाहों की सियाही दूर कर दी। ज़िन्दगी के 'अनमोल हीरे' गुनाहों में बरबाद करने पर मुझे नदामत होने लगी, सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करने की बरकत से मुझे तौबा की तौफ़ीक़ मिली और मैं ने नेक बनने का इरादा कर लिया, इसी मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे माह़ोल और इजतिमाअ़ की बरकत से जहां मुझे पांच वक़्त की नमाज़ पाबन्दी से अदा करने की तौफ़ीक़ नसीब हुई, वहीं प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा भी नसीब हो गया। यूं मैं राहे सुन्नत का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने सुन्नत के मुत़ाबिक़ चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ रख ली, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा

www.dawateislami.net

शरीफ़ सजा लिया और सफ़ेद मदनी लिबास ज़ेबे तन करना अपना मा'मूल बना लिया । ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से अपनी ख़िदमात सर अन्जाम दे रहा हूं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[1]

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **'163 मदनी फूल'** से मिस्वाक से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल सुनते हैं :

पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा सुन लीजिये ۞ दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अ़त से अफ़्ज़ल है । (الترغیب والترھیب، ۱/۱۰۲، حدیث:۱۸)

۞ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है ।

(مسند امام احمد، مسند عبد الله بن عمر بن الخطاب، ۲۴۳۸، حدیث: ۵۸۷۹)

۞ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ۞ मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ۞ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ۞ इस के रेशे

---

(1)... مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث:۱۷۵

www.dawateislami.net

नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइस बनते हैं ۞ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ۞ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ۞ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ۞ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ۞ हर बार धो लीजिये ۞ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंगलिया या'नी छोटी उंगली इस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ۞ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ۞ मुठ्ठी बान्ध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ۞ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. **1**, स. **623**)

۞ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बान्ध कर समन्दर में डुबो दीजिये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, '**बहारे शरीअ़त**' ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब '**सुन्नतें और आदाब**' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आओ मदनी क़ाफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र
सुन्नतें सीखेंगे इस में اِنْ شَآءَاللّٰه *सर बसर*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है।

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)